SHODH SAGAR®
International Journal for Research Publication and Seminar
ISSN: 2278-6848 | Vol. 15 | Issue 1 | Jan - Mar 2024 | Peer Reviewed & Refereed

आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की प्रवृत्ति

Dr. Bimal Malik,
Assistant Professor Deot. Of Hindi,
CRM Jat College, Hisar

Doi: https://doi.org/10.36676/jrps.v15.i1.1656 * Corresponding author
Accepted : 15/01/2024 Published: 29/01/2024

सारांश: यह शोधपत्र आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की प्रवृत्ति का विश्लेषण करता है। स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक असमानता, और आर्थिक समस्याओं ने हिंदी साहित्य को एक नई दृष्टि दी। प्रेमचंद, रेणु, और निर्मल वर्मा जैसे साहित्यकारों ने यथार्थ को अपने लेखन का केंद्र बनाया। इस शोध में इन लेखकों के योगदान तथा यथार्थवाद की सामाजिक उपयोगिता पर विचार किया गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद एक महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्ति है, जो विशेष रूप से 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित हुई। यह प्रवृत्ति समाज, जीवन, व्यक्ति और उनके संघर्षों को वास्तविक और ठोस रूप में प्रस्तुत करने पर बल देती है। यथार्थवाद के अंतर्गत लेखक कल्पनाओं और आदर्शों से हटकर जीवन की कठोर सच्चाइयों, सामाजिक विषमताओं, आर्थिक संघर्षों, राजनीतिक अन्याय और नैतिक द्वंद्वों को चित्रित करते हैं।

भूमिका: हिंदी साहित्य का विकास भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य के साथ हुआ है। बीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में जो बदलाव आए, उन्होंने साहित्य को भी प्रभावित किया। यथार्थवाद एक ऐसी प्रवृत्ति रही है जिसने साहित्य को जनता के करीब लाया। हिंदी साहित्य का आधुनिक युग (1857 के पश्चात) भारतीय समाज में आए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। इस युग में साहित्यकारों ने जीवन के विविध पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रित करना आरंभ किया। इसी काल में **यथार्थवाद** एक सशक्त साहित्यिक प्रवृत्ति के रूप में उभर कर सामने आया।

यथार्थवाद की संकल्पना: यथार्थवाद का तात्पर्य है – जीवन के यथार्थ, अर्थात वास्तविक, ठोस, और प्रत्यक्ष अनुभवों का चित्रण। यह प्रवृत्ति कल्पनाओं और आदर्शवाद से हटकर सामान्य जनजीवन की समस्याओं, संघर्षों और परिस्थितियों को उनके वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने पर बल देती है।

यथार्थवाद की अवधारणा: यथार्थवाद का तात्पर्य है समाज और जीवन की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करना। इसमें कल्पना से अधिक अनुभव और पर्यवेक्षण को महत्व दिया जाता है।

- **सामाजिक परिवर्तन और यथार्थवाद**: ब्रिटिश शासन, औद्योगीकरण, शहरीकरण, सामंतवाद का पतन, जातिवाद, स्त्री शोषण, मजदूरों की स्थिति इत्यादि मुद्दों ने समाज को अंदर से झकझोर दिया। साहित्यकारों ने इन ज्वलंत मुद्दों को उपेक्षित न कर उन्हें अपनी रचनाओं में यथार्थ रूप से स्थान दिया

- **भारतीय पुनर्जागरण और जागरूकता**: 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में शिक्षा, पत्रकारिता, समाज सुधार आंदोलनों ने जनचेतना को जागृत किया। साहित्यकारों ने समाज के दैनंदिन जीवन, संघर्ष, पीड़ा और शोषण को अपने साहित्य का विषय बनाया।
- **प्रेमचंद का योगदान**: हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की सबसे प्रभावशाली नींव प्रेमचंद ने रखी। उनकी कहानियों और उपन्यासों में ग्रामीण जीवन, गरीबी, शोषण, स्त्री की दशा, किसान की पीड़ा आदि को अत्यंत मार्मिक और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया। जैसे – *गोदान, कफ़न, सद्गति* आदि।
- **प्रगतिवादी आंदोलन और यथार्थवाद**: 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के साथ यथार्थवाद को वैचारिक और सैद्धांतिक आधार मिला। नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल, मंटो, इस्मत चुगताई जैसे साहित्यकारों ने सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता, यौन शोषण, राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि को निर्भीकता से उजागर किया।
- **नई कहानी और समकालीन यथार्थ**: 1950-60 के दशक में आई नई कहानी आंदोलन ने व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व, अकेलेपन, मध्यवर्गीय संघर्ष को केंद्र में रखा। मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव जैसे कथाकारों ने आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया।
- **समकालीन यथार्थवाद**: आज का हिंदी साहित्य जाति, लैंगिक भेदभाव, हाशिये के वर्गों (दलित, आदिवासी, स्त्री, किन्नर आदि) की समस्याओं को यथार्थ रूप में उजागर कर रहा है। दलित साहित्य, स्त्री लेखन, किन्नर विमर्श इत्यादि इसके उदाहरण हैं।
- **रेणु और आंचलिक यथार्थ:** फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने *मैला आँचल* जैसे उपन्यासों में बिहार के ग्रामीण जीवन का अत्यंत जीवंत चित्रण किया। उन्होंने आंचलिक भाषा और संस्कृति को मुख्यधारा साहित्य में स्थान दिलाया।
- **निर्मल वर्मा और आधुनिक यथार्थ:** निर्मल वर्मा ने मनोवैज्ञानिक यथार्थ को प्रमुखता दी। उनके लेखन में आधुनिक व्यक्ति की मानसिक द्वंद्व, अस्तित्व की चिंता और अकेलापन अभिव्यक्त होता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद की प्रवृत्ति: आधुनिक हिंदी साहित्य में **यथार्थवाद (Realism)** एक महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रवृत्ति रही है, जिसका उद्देश्य जीवन की वास्तविकताओं को बिना किसी आडंबर, आदर्शवाद या कल्पना के प्रस्तुत करना रहा है। यह प्रवृत्ति विशेषतः प्रेमचंद से प्रारंभ होकर अनेक लेखकों और कवियों द्वारा आगे बढ़ाई गई। यथार्थवाद ने साहित्य को समाज से जोड़ने का कार्य किया और साहित्य को जनजीवन का आईना बनाया।

प्रमुख यथार्थवादी लेखक व रचनाएँ:

- **प्रेमचंद** – *गोदान, निर्मला, कफन*
- **यशपाल** – *झूठा-सच, दिव्या*

- **फणीश्वरनाथ रेणु** – *मैला आँचल*
- **मुक्तिबोध** – यथार्थवादी दृष्टिकोण से युक्त कविता व आलोचना
- **महादेवी वर्मा** – नारी यथार्थ की गहराई से प्रस्तुति

यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ:

- **जीवन की सच्चाइयों का चित्रण:** यथार्थवादी साहित्य में जीवन की कटु, मधुर, कुरूप व सुंदर सभी सच्चाइयों का चित्रण निष्पक्ष रूप से किया जाता है। इसमें कल्पना की जगह यथार्थ की प्रधानता होती है।
- **सामाजिक समस्याओं का प्रतिबिंब:** यथार्थवाद में समाज में व्याप्त गरीबी, शोषण, जातिवाद, स्त्री-दमन, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को गंभीरता से उठाया जाता है।
- **आम आदमी का चित्रण:** यथार्थवादी रचनाओं के नायक-नायिकाएँ सामान्य जन होते हैं – किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, दलित, निम्न वर्ग आदि। इनकी संघर्ष-पूर्ण ज़िंदगी को केंद्र में रखा जाता है।
- **संवेदनशीलता व सहानुभूति:** यथार्थवादी लेखक पात्रों की पीड़ा को गहराई से महसूस करते हैं और पाठकों को उनके साथ सहानुभूति करने पर मजबूर करते हैं।
- **वर्ग संघर्ष और सामाजिक चेतना:** यथार्थवाद में अमीर-गरीब, श्रमिक-मालिक, शासक-शोषित के बीच संघर्ष को रेखांकित किया जाता है और सामाजिक बदलाव की आवश्यकता को रचनाओं में उभारा जाता है।
- **आदर्शवाद का अभा:** यथार्थवादी साहित्य में पात्रों को पूर्ण रूप से आदर्श या पापी नहीं दिखाया जाता, बल्कि उनके व्यवहार में द्वंद्व और मानवीय कमज़ोरियाँ होती हैं।
- **सरल व प्रभावशाली भाषा:** भाषा सहज, जनसामान्य की बोली के निकट होती है ताकि आम पाठक उससे जुड़ सके।
- **प्रामाणिकता:**घटनाएँ, स्थान, पात्र और संवाद यथासंभव वास्तविक जीवन के अनुरूप होते हैं, जिससे रचना में विश्वसनीयता आती है।

निष्कर्ष: हिंदी साहित्य में यथार्थवाद ने न केवल समाज के वास्तविक चित्र प्रस्तुत किए बल्कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा भी दिखाई। यह प्रवृत्ति आज भी प्रासंगिक है क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है। आधुनिक हिंदी साहित्य में यथार्थवाद केवल एक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि एक जागरूक दृष्टिकोण है जो समाज के उपेक्षित, शोषित और संघर्षरत वर्गों की आवाज बनकर सामने आता है। यह साहित्य को कल्पनालोक से निकालकर जीवन के ठोस धरातल पर लाकर खड़ा करता है, जहाँ पाठक स्वयं को, अपने समाज को और अपने युग को पहचानता है। यथार्थवाद ने हिंदी साहित्य को अधिक मानवीय, संवेदनशील और प्रासंगिक बनाया है।

संदर्भ सूची:

1. प्रेमचंद – *गोदान, गबन*

2. रेणु – *मैला आँचल*
3. निर्मल वर्मा – *वे दिन*
4. डॉ. नामवर सिंह – *हिंदी के नए प्रतिमान*
5. डॉ. रामविलास शर्मा – *भारतीय साहित्य की भूमिका*